सं. मो. पि./रोहतक/7-85/7552.—-पूंकि हरियाणा के राध्यपाल की राय है कि मैं॰ मोहन स्पीतिंग मिल, रोहत है, के श्रीमक श्री राज कुमार तथा उसके प्रथम्बकों के मध्य इसमें इसके बाद सिधित मामसे में कोई घोषोणिक विदाद है;

भोर भूंफि हरियाणा के राष्य्रपाल विदाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, भव, भौजीगिक विवाद भिवित्यम, 1947, की भारा 10 की उपधारा (1) के राष्ट्र (ग) हारा प्रवान की गई शिक्तवों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी भिवित्यकता सं 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी भिवित्यकता सं 3864-ए.एस.भो.(ई)—श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, हारा उक्त प्रधिनियम की श्रारा 7 के भदीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, की दिवादप्रस्त या उससे सुधंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिया मामला न्यायिनग्य के लिए निविद्य करते हैं जो कि उन्त प्रदेशकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—
व्या श्री राज कुमार की सेवामों का समापन न्यायोपित तथा ठीक है 7 यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 12 मार्च, 1985

सं. भो. वि./एफ. डो./9-85/9423.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है जी मै. भशोका आईस एफ: अनरल मित्त, रिवाडी रोड़, नारनोल के श्रमिक श्री गुरदियाल सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई भौधोगिक दिवाद है ;

ग्रीर पूंकि हरियाणा हे राज्यपाल विदाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना गंछनीय समझते हैं ;

इसलिये, भव, मौधोगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्षायों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं०11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनवंय के हिथे निद्धित करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री गुरदियाल सिंह की सेवाओं का समापन न्योयोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । कि मैं श्री वाबाद 2-85 9446. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैं श्राटो ग्लाईड प्रा० लि० व्याट नं 64, सैक्टर--6, फरीपा बाद, के श्रीमक श्री दहादुर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिधित मामले में कोई श्री द्योगिक विधाद है ;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

्सिलिये, ग्रब, श्रौधोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के धण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं धिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिपूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिनियम की ग्रारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिये निर्दिष्ट कस्ते हैं जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद सुसंगत ग्रथा सम्बन्धित मामला है :---

भ्या श्री बहादुर सिंह की सेवाओं का समापन स्थायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं. मो.चि./फरीदाबाद/2-85/9453.—चूंजि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. भाटो ग्लाईड प्रा. लि., व्लाट नं. 64, सैन्टर 6, फरीदाबाद के श्रमिक सी महेन्द्र सिद्ध तथा उसके प्रयत्वकों के मध्य इसमें इसके बाद खिरित मामले में कोई सौधोनिक विवाद है;

भीर पूंकि इरियाणा के राज्यपाल विवाद को व्यायनिर्णय हेंगु निविष्ट करना बांछनीय समहाते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिस्चना सं. 11495 जी-श्रम 88-श्रम/57/1:245, दिनांक 7 फरनरो, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरांदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री महेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

मं.भ्रो. वि./एफ.डो./35-85/9460.—-वृंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि में. जो. जी. टैक्सटाईल 22-ए, इण्डस्ट्रोयल एरिया, फरांदाबाद, के श्रमिक श्रो विभिषण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ⊶ूभोद्योगिक विवाद है ;

भौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रब, भौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, को धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415 · 3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम /57/11345, दिनांक 7 फर्निरी, 1953, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की खारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :--

सं. श्रो.वि./भिवाजी/8--85/11541.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैं. मौहता इलेक्ट्रो स्टील लि., ाभवानी, के श्रमिक श्री पतेह सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भी छोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, भ्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 भवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए-एस-प्रां. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री फनेह सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है

सं. मो.वि./रोहतक/234-84/11548.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मोहन स्वीनिंग मिल, रोहतक, के श्रमिक भी रोहतास तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) है खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए-एस अो. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा

उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक. को विवादग्रस्त या उससे मुसंगर या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेत् निक्टिंट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या श्री रें/हें ते की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित । तथा ठीक है है यदि यहीं, तो वह फिस सहत का हक बार है है

सं स्रो. वि./रोहनक/23!-84/11555.—चिक हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैं. मोहन स्पीनिंग मिल, रोहनक, के श्रमिक श्री राजेन्द्र प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों ने मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिषय हेतू निदिष्ट करना यांछनीय समझते है ;

इसलिये, ग्रय, ग्रीयोगिक विदाद ग्रीयिनयम. 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्राधिसूचना सं. 9841—1—श्रम-70/325 / र दिनांक अन्तरम्यर, र 1970, के साथ गठित सरकारा ग्राधिसूचना सं. 3861-ए-एस-ग्रो. (ई) श्रिम/70/1348, दिनांक 8 मार्च, 1970, द्वारा उका ग्राधिनयम / की धारा 7 के ग्राधीन गठित श्रम न्यायालय, शेहनव, को विवादग्रस्त या उसके सुगंगत या उससे सम्बन्धित नीचे दिखा मामला स्थायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के देश या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से गुनंगत था सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री शाजेन्द्र प्रसाद की सेवाम्रों का समापन न्योबोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

मं. ग्रो.वि./रोहतक/233-84/11592.—बूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मंह्न रहोतिन मिल, रोहतक, के श्रमिक श्री रामणी लाल तथा उसके प्रयन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपान विवाद को न्यायनिर्णय हेनू निदिष्ट करना बांछनीय समजने हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम 50/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित भर असे श्रीधसूचना सं. 3834-ए-एन यो. (२) थम/२०/1348, दिनाक 8 गई. 1970, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोजिक, को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उत्तरे सम्मिना है या उत्तर विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राम में लाग की सेवास्रों का समाधन वार्याचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, में वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 4 मार्च, 1985

सं. ब्रो.वि./एफ.डी./8056 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग्र है कि मैं. शीला इन्टर प्रासिज, प्लाट नं. 17, मार्किट नं, 5 एन, ब्राई. टी. करीदाबाद के श्रमिक श्री पुली तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मार्गले में कोई ब्रोटोगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु तिर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसिलयें, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 को बारर 10 का उपारा (1) के बाद (ग) इस्स बद्धा की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यभाव इसके द्वारा मरकारी ग्रीयमूनना में 5415-3-अन 33/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958. द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायावय, फरीदाबाद, को विवादमन या उनके सुगंगत या उसने सम्मिन्द्रत नीचे विखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रजन्मकों तथा श्रीम के के बोज या तो विवादग्रन सामला है या विवाद में मुसंगत ग्राथस सम्बन्धित मामला है:----

क्या श्री पुत्री की सेराओं का समायत त्या ग्रीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कि**स राहत** का हकदार है ?

Ç

म. श्रो.वि..करो । शर्म $\frac{1}{2}$. 1-8 $\frac{1}{2}$ 30 $\frac{1}{3}$ - ्तूंकि ह्रियामा के राज्यस्य को सप है कि मै. डावरी वालास्टील एण्ड इन्जिनियरिंग क. कि व्याट नं. 136, मैक्टर 04 फ़री राजाद के श्रीमक श्री नानक जन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद विश्वित मानले में कोई भौगामिक विवाद है ;

मीर चूंकि इरियाणा के राज्य सल विचाद को स्वायनिर्ण । हेनु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस पि, श्रव, श्रीवीगित विवाद श्रीविनिया 1947, की धारा 10 की जागरा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई शिवायों का अधीग करते दुए हरियाणा के राज्यक्षत इसके द्वारा सरकारी श्रविसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जन, 1958, के साथ पहले दूए श्रविसूचना संव 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रवि-ियम की धारा 7 के श्रवीन गठिन श्रम न्यायालय, फरोरावाद, की विवादशस्त या उससे मुसंगत या उससे संविधित नीचे लिखा मामला न्यायिक है जो कि उसा प्रकार विवाद श्रीम की बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अववा संविधा गणना है या विवाद से मुसंगत अववा संविधा गणना है ---

क्या श्री नःनक चन्द की सेवाश्रों का सभारन न्यायोजित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का हकदार</mark> है ?

मं श्रो. $4./\sqrt{6}$. डो.434-85/8070.—चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व्हण्डिया फोर्ज एण्ड हुएट स्टेमियंग जिल, 12/3, मधुरा रोड, फरीडाबाद के श्रमिक श्री सुरेश शर्मा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में बोई बोद्योगिक विवाद है ;

भीर वृंकि हिरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

्मितिए, अब, धौद्योिक विवाद अधिनियम, 1947, की द्यारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिनिश्यों का प्रयोग करने हुन हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अन/68 :5254, दिनांक 20 जून, 1958, के साथ पड़ने हुन अधिमुजना वं 11495-जा-श्रव 57/11245, दिनांक 7 फर गरा, 1958, द्वारा उस्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, करीदावाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे पम्यन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए निविष्ट करते हैं जो कि उस्त प्रजन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विचादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री मुरेश शर्मा की सेत्राश्रा का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ह्यो. सि./एक. डा./२०३-84/8077.—चूिक हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० एलसन काटन मिल्ज, लि०, मश्रुरा रोइ. ब लगगढ़ के श्रमिक श्री मती बन्सरी देवी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर वृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाः को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, स्रव, सौद्योगिक विवाद स्रिष्टित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मित्तयों का प्रयोग करने हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा तरकारी श्रीधसूचना सं 5415-3-श्रम/१८/15254, दिनांक 20 जून, 196%, के साथ पढ़ते हुए अधिवृचना सं 511495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठिन श्रम न्यापालय, करादावाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला स्थायिनर्गय की लिए निर्दिग्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत सम्बन्धित मामला है .--

क्या श्री मं री बन्सरी बैबर की सेवाझी का समापन स्थापाचित तथा ठीक है? प्रवि नहीं, तो बह किस राहत की हकदार है ?

मं. स्रो.वि $\int_{\mathbb{R}} |x|^2/29 - 8 \cdot \sqrt{8 \cdot 105} = -\frac{1}{2}$ कि हरियाणा के राज्यपान की राम है कि मैं दिसार सैन्टल कोश्रापरेटिय बैंध विक, हि (x), के श्रमिक श्रो श्रोम प्रकाश तथा उसके प्रवत्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

मौर च्कि हरियाणा के राज्यपाल विदाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/52573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिमूचना सं. 3864 ए-एस. श्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई. 1970 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहत्तक, को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री ग्रोम प्रकाश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो.वि./हिमार/76-84/8117.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा राज्य परिवहन, िरसा, (2) परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डोगढ़, के श्रमिक श्री राम प्रताप परिचालक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है ;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यतान विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलियें, ग्रब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947. की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9341—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पेठित सरकारी ग्रिधसूचना सं॰ 3864-ए-एस-ग्रो (ई)श्रम-70/1343, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिख मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री राम प्रत ५, ४रिचालक की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नही, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं .स्रो.वि./हिसार/144-84/8124--इरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० दो बैंक स्टाफ सहकारी म्रबंन (एस०ई०) थ्रिफ्ट एण्ड केडिट समिति लि.. हिासर, के श्रीमक श्री राजीव चड्ढा तथा उसके प्रबन्धकों के वीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्बर, 1970 के साथ पठित 'सरकारी ग्रधिस्चना सं. 3864—0.एस. श्रो. (ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उवत ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रबन्धको तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :——

क्या श्री राजीव चड्ढा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो.वि./एफ.डी./31-85/8137.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मैं. कोहिनूर पैन्टच प्रा. लि., 14/5, मथुरा रोड, फरोदाबाद के श्रमिक श्री ल.ल वहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलियें, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारों ग्रीधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्राधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये गिर्निद्ध करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री लाल यहादुर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?